मसीह से पहले का समय

Randolph Dunn

Time Before Christ

मसीह से पहले का समय

निर्माण और पतन

पाठ 1

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। अब पृथ्वी निराकार और खाली थी, अन्धकार की सतह पर अन्धकार था, और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडरा रहा था। और परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश होने दो, ' और ज्योति थी" (उत्पत्ति 1:1-3)। जबकि यूहन्ना 1:1-3 कहता है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के पास था, और वचन परमेश्वर था। वह आरम्भ में परमेश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब कुछ बनाया गया; उसके बिना कुछ भी नहीं बना जिसे बनाया गया है।" शुरुआत के बारे में मनुष्य केवल वही जानता है जिसे परमेश्वर ने उसे प्रकट करने के लिए चुना है। "शिक्षित पुरुषों" के सिद्धांत अप्रमाणित हैं और अक्सर जो सामने आया है उसके विपरीत है।

उत्पत्ति 1:26-27 में वर्णित सृष्टि का अंतिम दिन है "तब परमेश्वर ने कहा, 'आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर प्रभुता करें। पशुओं पर, और सारी पृथ्वी पर, और सब प्राणियों पर जो भूमि पर रेंगते हैं।' सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार उस ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने उनकी सृष्टि की।" यह सृष्टि उसकी अन्य सभी कृतियों से भिन्न थी क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर की समानता में, उसके स्वरूप में बनाया गया था। मनुष्य ईश्वर की सटीक प्रति नहीं है। मनुष्य को मांस और रक्त बनाया गया था जबकि ईश्वर आत्मा है।

परमेश्वर ने मनुष्य को शेष सृष्टि के बीच में शासन करने और उस पर प्रभुत्व रखने के लिए रखा। उसने आदम, आदम से कहा कि वह काम करे और उसकी देखभाल करे। "और यहोवा परमेश्वर ने उस मनुष्य को आज्ञा दी, कि तू बाटिका के किसी भी वृक्ष का फल खाने को स्वतंत्र है, परन्तु भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना, क्योंकि जब तू उसका फल खाएगा, तो निश्चय मर जाएगा।" " (उत्पत्ति 2:16-17)

शैतान ने हव्वा को झूठ बोलने के लिए लुभाने के लिए एक सर्प का रूप धारण किया। "जब स्त्री ने देखा कि वृझ का फल खाने में अच्छा, और आंख को भाता है, और बुद्धि के लिये भी मनभावन है, तब उस ने कुछ लेकर खा लिया। इसे खाया।" (उत्पत्ति 3:6)

याकूब प्रलोभन की प्रक्रिया को परिभाषित करता है: "परन्तु हर एक की परीक्षा तब होती है, जब वह अपनी ही बुरी अभिलाषा से घसीटा और बहकाया जाता है। फिर, अभिलाषा के गर्भवती होने के बाद, वह पाप को जन्म देती है, और पाप, जब वह पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है, मृत्यु को जन्म देता है।" (याकूब 1:14-15)

हव्वा के लिए फल आंख को भाता था और उसे बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय था, लेकिन अवज्ञा के परिणाम हैं। इस मामले में परिणाम तत्काल था। हालाँकि, कुछ स्थितियों में पाप का पता तब तक नहीं लगाया जा सकता जब तक कि वह परमेश्वर का सामना न कर दे। उन्हें स्वर्ग से हटाकर परिश्रम और पीड़ा के देश में ले जाया गया। परमेश्वर ने सर्प से कहा, "इस कारण तू ने ऐसा किया है, तू सब पशुओं और सब वनपशुओं से अधिक शापित है! तू अपके पेट के बल रेंगेगा, और जीवन भर धूल खाएगा। तू और स्त्री, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा।' उस स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरे जनने की पीड़ा को बहुत बढ़ाऊंगा, और तू पीड़ा के साथ सन्तान उत्पन्न करेगी। तेरी इच्छा तेरे पति की होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। उस ने आदम से कहा, क्योंकि तू ने अपक्की पत्नी की बात मानकर उस वृक्ष का फल खाया, जिसके विषय में मैं ने तुझे आज्ञा दी थी, कि उसका फल न खाना, क्योंकि भूमि तेरे कारण शापित है; तू उस में से जीवन भर कठिन परिश्रम करके खाएगा। वह तुम्हारे लिये काँटे और ऊँट पैदा करेगा, और तुम मैदान के पौधे खाओगे। जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपके माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19) जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपके माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19) जब तक तू भूमि पर न लौट जाए, तब तक तू अपके माथे के पसीनेके पसीनेसे खाएगा; तू मिट्टी है, और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।" (उत्पत्ति 3:14-19)

इस पाप के साथ आदम और हव्वा दोनों को परमेश्वर से अलग कर दिया गया था और उसके साथ फिर से जुड़ने की आवश्यकता थी। इस मेल-मिलाप के लिए उनके अवज्ञा के पाप के लिए एक सिद्ध बलिदान की आवश्यकता होगी।

प्रशन

1. परमेश्वर ने आदम को केवल एक ही निर्देश दिया था कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए।
   सत्य _____ असत्य _____

2. आदम, फलस्वरूप समस्त मानवजाति, सृजा गया था
एक _____ बिल्कुल भगवान की तरह।
बी _____ अन्य सभी जानवरों की तरह जो हवा में सांस लेते हैं।
सी _____ भगवान की समानता में।

3. हव्वा यह न समझ सकी कि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल वह न खाए।
सत्य _____ असत्य _____

4. आदम और हव्वा ने पाप किया क्योंकि
ए ____ उन्होंने वर्जित फल खा लिया क्योंकि वे भूख से मर रहे थे।
बी ____ सर्प के रूप में शैतान ने उन्हें निषिद्ध फल खाने के लिए मजबूर किया।
ग ____ उन्होंने प्रलोभन के आगे झुककर और वर्जित फल खाकर परमेश्वर की अवज्ञा की।

5. चूँकि हव्वा ने वर्जित फल खा लिया, आदम के पास कोई विकल्प नहीं था क्योंकि परमेश्वर ने उसके लिए हव्वा को बनाया था।
सही गलत _____

आदि - मानव

पाठ 2

आदम और हव्वा

हव्वा यह जानकर कि परमेश्वर ने उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी है, उसकी अभिलाषाओं के आगे झुकी, और उस फल में से कुछ आदम को दिया और उसने भी खाया। साँप के रूप में शैतान ने उन्हें पाप के लिए बहकाया था। अवज्ञा के इस कार्य के परिणामस्वरूप उन्हें स्वर्ग, अदन की वाटिका से निष्कासित कर दिया गया, और उनके पाप के अन्य परिणाम भुगतने पड़े। परिणाम भगवान से अलगाव, दर्द और मृत्यु थे।

उनका सबसे बड़ा दर्द तब रहा होगा जब एक बेटे कैन ने दूसरे बेटे हाबिल को मार डाला। हत्या से पहले पाप मौजूद था क्योंकि कैन का हृदय शुद्ध और ईश्वरीय नहीं था। कैन और एबल दोनों ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए। परन्तु कैन क्रोधित हो गया क्योंकि हाबिल की परमेश्वर को भेंट स्वीकार की गई और उसकी अस्वीकार कर दी गई।

कैन और एबल

इब्रानियों 11:4 में हम पढ़ते हैं कि हाबिल की भेंट विश्वास के द्वारा थी। अब विश्वास ज्ञान और प्रेम पर आधारित है। इसलिए हाबिल के कार्य और व्यवहार ने परमेश्वर को प्रसन्न किया जबकि कैन ने नहीं। परमेश्वर ने कैन की भेंट के बारे में कहा "यदि तुम वही करते हो जो सही है, तो क्या तुम्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा? लेकिन यदि तुम वह नहीं करते जो सही है, तो पाप तुम्हारे द्वार पर है; वह तुम्हें पाने की इच्छा रखता है, लेकिन तुम्हें उसमें महारत हासिल करनी चाहिए।" (उत्पत्ति 4:7)

इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि कैन ने जिस वस्तु की पेशकश की वह स्वीकार्य नहीं थी या उसका रवैया अस्वीकार्य था या दोनों। हो सकता है कि उसने अपना सर्वश्रेष्ठ न दिया हो, हो सकता है कि उसने कुछ ऐसा दिया हो जो अधिकृत न हो या उसने ठीक वही दिया हो जिसकी आवश्यकता थी, लेकिन ईश्वर के प्रेम के अलावा अन्य दृष्टिकोण के साथ। स्थिति जो भी हो, परमेश्वर प्रसन्न नहीं था और कैन जानता था कि क्यों। सजा के रूप में, पृथ्वी उसके लिए फल नहीं देगी और वह एक बेचैन पथिक बन जाएगा।

नूह

परमेश्वर ने नूह को बताया कि उसे धर्मी लोगों को आसन्न जलप्रलय में नष्ट होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि ये निर्देश असामान्य लेकिन बहुत स्पष्ट थे। नूह ने शायद यह भी सवाल किया होगा कि केवल एक खिड़की और दरवाजे वाली इतनी लंबी, चौड़ी और ऊँची एक ही लकड़ी से बनी नाव उसे और उसके परिवार को कैसे बचा सकती है। हालाँकि, उसने दूसरों को उनकी विद्रोही और पापपूर्ण जीवन शैली के परिणामों के बारे में तुरंत चेतावनी देना शुरू कर दिया। इब्रानियों 11:7 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर पवित्र भय से अपने घराने के उद्धार के लिथे एक जहाज बनाया। अपने विश्वास से उस ने जगत को दोषी ठहराया, और उस उस धार्मिकता का वारिस हुआ जो विश्वास से आती है।"

सारांश

अब तक बाइबल की पहली पुस्तक के केवल छह अध्यायों में हमने तीन स्थितियों को देखा है जहाँ लोगों ने अपनी इच्छाओं को प्रतिस्थापित करते हुए, परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना की; एक ने अवज्ञा की क्योंकि यह आंख को भाता था और उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिए कुछ चाहा जाता था, एक ने भेंट चढ़ाकर अवज्ञा की, एक पूजा का कार्य, जो भगवान को प्रसन्न नहीं था और एक समूह ने उनके मन के विचारों और इरादे के रूप में अवज्ञा की थी लगातार बुराई। परमेश्वर हर मामले में अप्रसन्न था, उनके कार्यों को उसके स्तर, उसके वचन के विरुद्ध न्याय करते हुए। एक धर्मी परमेश्वर, उनके रचयिता ने, उनके कार्यों के लिए उपयुक्त समझे जाने वाले परिणामों को स्थापित किया।

प्रशन
1. कैन की भेंट स्वीकार्य नहीं थी क्योंकि
A _____ यह पशुबलि के बजाय अनाज की भेंट थी
बी _____ कैन आज्ञाकारी नहीं था इस प्रकार उसकी भेंट के साथ पाप किया
सी _____ उसने अपने लिए सर्वश्रेष्ठ रखा
डी _____ प्रकट नहीं होता है
2. नूह ने परमेश्वर की योजना का ठीक-ठीक पालन किया और परमेश्वर की राय के स्थान पर अपनी राय को प्रतिस्थापित नहीं किया।
सही गलत ____

3. नूह के विश्वास पर आधारित था
A_____ परमेश्वर जो चाहता था उसके बारे में उसकी भावनाएँ।
B_____ किसी और की राय है कि भगवान क्या चाहते हैं।
C_____ परमेश्वर ने जो कहा, उसका ज्ञान वह चाहता था।

4. परमेश्वर अप्रसन्न होता है जब उसकी समानता में सृजे गए उसकी अवज्ञा करते हैं।
सही गलत____

5. परमेश्वर से विद्रोह करने और उसकी अवज्ञा करने का कोई परिणाम नहीं होता है।
सही गलत _____

उनकी पसंद

अध्याय 3
नूह एक धर्मी व्यक्ति था जिसने परमेश्वर की आज्ञा मानी। विश्वास से उसने मानव जाति को विनाश से बचाने के लिए एक जहाज बनाया। सन्दूक के पूरा होने के बाद नूह और उसका परिवार सन्दूक में प्रवेश किया और परमेश्वर ने हवा में सांस लेने वाले जानवरों को सन्दूक में आने दिया। जब परमेश्वर ने दरवाजा बंद किया, तो उसने धरती पर बाढ़ लाने के लिए गहरे पानी के फव्वारे और स्वर्ग की खिड़कियां खोल दीं। दिनों और महीनों के बाद, पानी कम हो गया। तब नूह, उसका परिवार और पशु सन्दूक में से निकले।

नूह ने तुरंत एक वेदी बनाई, बलिदान चढ़ाया और परमेश्वर की उपासना की। इस भेंट ने परमेश्वर को प्रसन्न किया "यहोवा ने मनभावन सुगन्ध को सूंघकर अपने मन में कहा, 'मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, चाहे उसके मन में बचपन से ही सब कुछ बुरा हो। और जैसा मैं ने किया है, वैसा फिर कभी मैं सब प्राणियोंको नाश न करूंगा। जब तक पृथ्वी टिकती है, बीज का समय और फसल, ठंड और गर्मी, गर्मी और सर्दी, दिन और रात कभी खत्म नहीं होंगे।" (उत्पत्ति 8:21-22) परमेश्वर ने कुछ निर्देश या आज्ञाएँ भी दीं (उत्पत्ति 9:3-7):
• जो कुछ भी रहता है और चलता है वह आपके लिए भोजन होगा
• जैसे मैंने तुम्हें हरे पौधे दिए, वैसे ही अब मैं तुम्हें सब कुछ देता हूं,
• परन्तु जिस मांस में उसका जीवन रक्त हो, वह मांस न खाना।
• और तुम्हारे जीवन-रक्त का लेखा-जोखा अवश्य माँगूँगा। मैं हर जानवर से हिसाब मांगूंगा। और हर एक मनुष्य से मैं भी उसके संगी मनुष्य के प्राण का लेखा-जोखा मांगूंगा।
• जो कोई मनुष्य का लोहू बहाए उसका लोहू मनुष्य के द्वारा बहाया जाए; क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार बनाया है।
• जहाँ तक आपकी बात है, फलदायी बनो और संख्या में वृद्धि करो; पृथ्वी पर गुणा करो और उस पर बढ़ो।

तब परमेश्वर ने नूह और सभी जीवित प्राणियों के साथ एक वाचा स्थापित की।

पाप ने फिर से दरवाजा खटखटाया क्योंकि हाम ने अपने पिता के प्रति अनादर दिखाया जिसके बाद उसे अपने भाइयों का दास बनने का श्राप मिला।

रोमियों 1:28-32 में "और जब उन्होंने परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना उचित नहीं समझा, तो उसने उन्हें भ्रष्ट मन के हवाले कर दिया, कि वह करें जो नहीं करना चाहिए। वे हर प्रकार की दुष्टता, बुराई, लोभ और भ्रष्टता से भर गए हैं। वे ईर्ष्या, हत्या, कलह, छल और द्वेष से भरे हुए हैं। वे गपशप करनेवाले, निन्दक करनेवाले, परमेश्वर से बैर रखनेवाले, ढीठ, अभिमानी और घमण्डी हैं; वे बुराई करने के तरीके ईजाद करते हैं; वे अपने माता-पिता की अवज्ञा करते हैं; वे संवेदनहीन, विश्वासहीन, हृदयहीन, निर्दयी हैं। यद्यपि वे परमेश्वर के उस धर्मी आदेश को जानते हैं कि जो ऐसे काम करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं, वे न केवल यही काम करते रहते हैं, वरन उन पर चलनेवालों को भी प्रसन्न करते हैं।" नूह के समय और हमारी स्थिति में समानता पर ध्यान दें:
एक। लोग पापी थे और हम पापी हैं - रोमियों 3:23 "क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"
बी। वे मरने वाले थे और हम भी हो सकते हैं - यूहन्ना 8:24क "मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे।"
सी। नूह को बताया गया था कि धर्मियों को बचाने के लिए क्या करना चाहिए और हमने भी ऐसा ही किया है - यूहन्ना 8:24बी "यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं [यीशु] [मसीह, परमेश्वर का पुत्र] हूं, तो तुम अपने पापों में मरोगे।"
डी। नूह के समय के सभी लोगों के पास चुनने के लिए एक विकल्प था और हमारे पास एक विकल्प भी है - 2 कुरिन्थियों 6:2ब "मैं तुमसे कहता हूं, अब है
भगवान की कृपा का समय, अब मोक्ष का दिन है।"

प्रश्न
1. नूह को धर्मी माना गया क्योंकि उसने एक जहाज बनाया और मानव जाति को बचाया।
सही गलत _____

2. किसी के उद्धार के लिए स्वीकार्य समय कब है?
A _____ के बाद एक ने अपने जंगली जई बोए हैं।
बी _____ जब समय का दबाव इतना अधिक नहीं होता है
C_____वर्तमान जैसा कोई समय नहीं है।

3. क्या होता है जब लोग अपने ज्ञान में परमेश्वर को बनाए रखने से इनकार करते हैं?
ए _____ भगवान के बुलावे को स्वीकार करने में कभी देर नहीं होती।
बी _____ समय उनके ज्ञान की इच्छा पैदा करते हुए हृदय को मधुर बना देगा।
सी _____ भगवान उन्हें उनकी इच्छाओं के लिए देता है।

4. परमेश्वर के लिए नूह की आराधना के बाद, परमेश्वर ने वादा किया कि वह फिर कभी पानी से सभी जीवित प्राणियों को नष्ट नहीं करेगा।
सही गलत _____

5. जो लोग यीशु को मसीह नहीं मानते, वे अपने पापों में मरेंगे
सही गलत _____

भगवान के वादे

पाठ 4
आदम और हव्वा के प्रलोभन के वर्षों बाद और परमेश्वर की आज्ञा मानने के बजाय उनकी इच्छाओं के प्रति समर्पण, बाढ़ के दो सौ नब्बे साल बाद और सैकड़ों साल पहले परमेश्वर ने मूसा को पत्थर पर आज्ञाएँ दीं, तेरह अब्राम का पिता बन गया। वयस्क होने के बाद, परमेश्वर ने अब्राम से एक प्रतिज्ञा की। "यहोवा ने अब्राम से कहा था, अपक्की प्रजा और पिता के घराने को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा; मैं तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का कारण होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे शाप दें, उसे मैं शाप दूंगा; पृथ्वी के सब लोग तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" (उत्पत्ति 12:1-3) परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर इब्राहीम कर दिया जब उसने उसके साथ अपनी वाचा स्थापित की। इसलिए इब्राहीम अपना घर छोड़कर कनान चला गया।

इब्रानियों 11 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से उस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में परदेश में परदेशी के समान अपना ठिकाना बनाया; वह इसहाक और याकूब की नाईं डेरे में रहा, जो उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे। नींव के साथ शहर के लिए आगे, जिसका वास्तुकार और निर्माता भगवान है।" (बनाम 8-10) यह स्पष्ट होना चाहिए कि इब्राहीम के लिए परमेश्वर का वादा एक राष्ट्र के बजाय सभी मानव जाति के लिए था।

इब्राहीम और सारा, उसकी पत्नी, निःसंतान थे, हालाँकि परमेश्वर ने वादा किया था कि उनके कई वंशज होंगे। वे परमेश्वर के लिए अपने बेटे के वादे को पूरा करने के लिए अधीर हो गए। मानवीय तर्क का प्रयोग करते हुए, उन्होंने मामलों को अपने हाथों में ले लिया। उनकी अधीर कार्रवाई ने बाद में इश्माएल के वंशजों, सारा की दासी द्वारा पैदा हुए अब्राहम के पहले, और इसहाक, इब्राहीम और सारा के वादे के पुत्र के बीच महान संघर्ष का कारण बना। परमेश्वर ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि अब्राहम और सारा के लिए एक बच्चा पैदा करना शारीरिक रूप से असंभव था, इसलिए जब उनके पास एक बच्चा होगा तो इसमें कोई संदेह नहीं होगा कि यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा और उनके विश्वास का प्रत्यक्ष परिणाम था। (इब्रानियों 11:11-12)

इब्राहीम कई राष्ट्रों का पिता बन गया और विश्वासियों के पिता के रूप में जाना जाता है, लेकिन वह पाप से रहित नहीं था। उसने एक से अधिक अवसरों पर झूठ बोला। जब परमेश्वर से उसका सामना हुआ तो उसने पश्चाताप किया और उस पर अपना विश्वास और भरोसा रखा। यह इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों के माध्यम से है कि आज्ञाकारी विश्वासियों को छुड़ाने के लिए एक उद्धारकर्ता दुनिया में आएगा।
"जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हुआ, तब यहोवा ने उसे दर्शन देकर कहा, कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; मेरे साम्हने चल और निर्दोष बन। (उत्पत्ति 17:1-2) सभी पुरुषों का खतना करने की परमेश्वर की आज्ञा के प्रति इब्राहीम की आज्ञाकारिता के द्वारा वाचा पर मुहर लगा दी गई। इससे पहले कि उनके कोई बच्चे थे और मूसा को कानून दिए जाने से सैकड़ों साल पहले। लगभग एक वर्ष के बाद इसहाक का जन्म हुआ और इब्राहीम ने वाचा के अनुसार आठवें दिन उसका खतना किया।

बाद में, जब इसहाक बड़ा हुआ, तो परमेश्वर ने इब्राहीम को इसहाक को होमबलि के रूप में चढ़ाने की आज्ञा दी। यह अब्राहम के विश्वास की परीक्षा थी। इब्राहीम ने तर्क दिया कि चूँकि परमेश्वर ने उसे इसहाक दिया था, जब उसके और सारा के लिए एक बेटा होना शारीरिक रूप से असंभव था, तो वह अपने वादे को पूरा करने के लिए इसहाक को मृतकों में से वापस ला सकता था।

परमेश्वर और अब्राहम के बीच इस संबंध के बारे में इतना महत्वपूर्ण क्या है? सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर को आज्ञाकारी विश्वासयोग्यता की आवश्यकता है। इब्राहीम के विश्वास के माध्यम से मनुष्य को उसके साथ मेल-मिलाप करने का मार्ग प्रदान करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की शुरुआत हुई। यह तब तक महसूस नहीं होगा जब तक कि वर्षों बाद नासरत का यीशु, पूरी आज्ञाकारी विश्वासयोग्यता के माध्यम से, स्वयं को मनुष्य के पापों के प्रायश्चित बलिदान के रूप में पेश करेगा। यह प्रतिज्ञा के पुत्र इसहाक के माध्यम से था, न कि उसका पहला जन्म इश्माएल, कि वाचा को जारी रखा जाएगा क्योंकि यीशु दाऊद के माध्यम से इसहाक का वंशज था।

यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि इब्राहीम के द्वारा पृथ्वी के सभी लोग आशीष पाएंगे। इसलिए, ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे मानव जाति अपना मेल-मिलाप अर्जित कर सके। यह यीशु, मसीह, उनके वचन, सुलह का संदेश के प्रति दृष्टिकोण, विश्वास और आज्ञाकारिता का एक वादा और मामला है।

यह इतना आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए कि परमेश्वर वफादार आज्ञाकारी को आशीर्वाद दे और विद्रोही अवज्ञाकारियों को वंचित कर दे।

प्रश्न
1. इब्राहीम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा दी गई थी कि उसका वंशज समस्त मानवजाति को आशीष देगा
   ए ____ दस कमांडेंट देने के बाद।
   बी ____ उस समय इब्राहीम ने इसहाक को भगवान को बलिदान के रूप में पेश किया था।
   सी ____ कनान जाने से पहले अपने पिता तेरह के साथ।

2. अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा अब्राहम की परमेश्वर पर भरोसा करने की इच्छा पर आधारित थी।
सही गलत _____

3. इब्राहीम के विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने इसहाक के भौतिक जीवन को बख्शा।
सही गलत _____

4. इब्राहीम को विश्वासयोग्य के पिता के रूप में संदर्भित किया गया था क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया था।
सही गलत _____

5. परमेश्वर अपने वादों को पूरा करने में विश्वासयोग्य है।
सही गलत _____

गंभीर पाप

पाठ 5
इब्राहीम के चरवाहों और लूत, उसके भतीजे, इब्राहीम के बीच समस्याओं के कारण, इब्राहीम ने लूत को अपनी भूमि चुनने की अनुमति दी और इब्राहीम एक और क्षेत्र ले लेगा। लूत ने सदोम नगर के निकट के उत्तम क्षेत्र को चुना।

"और यहोवा ने कहा, सदोम और अमोरा के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट, और उनका पाप बहुत बड़ा है, इसलिये मैं अब नीचे जाकर देखूंगा, कि जो चिल्लाहट मेरे पास आई है उसके अनुसार उन्होंने ठीक वैसा ही किया है या नहीं; और नहीं तो मुझे पता चल जाएगा।" (उत्पत्ति 18:20-21) इससे पहले कि परमेश्वर ने सदोम को नष्ट करने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा, उसने अपनी योजनाओं को इब्राहीम के सामने प्रकट किया जिसने परमेश्वर से सदोम को बचाने की याचना की क्योंकि वहां धर्मी लोग रहते थे। लेकिन इतने कम थे। सो परमेश्वर के दूत मनुष्यों के रूप में सांझ को सदोम नगर में प्रवेश करते हुए दिखाई दिए। जब लूत ने इन आगंतुकों को देखा, तो उसने जोर देकर कहा कि वे उसकी सुरक्षा में उसके घर में प्रवेश करें।

सदोम की दुष्टता निम्नलिखित में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है; "उनके लेटने से पहिले, नगर के पुरूषों, क्या सदोम के पुरूषों, क्या बूढ़े क्या जवान, क्या चारोंओर के सब लोगों ने भवन को घेर लिया, और लूत को बुलाकर उस से कहने लगे, कि वे पुरूष कहां हैं जो क्या तुम आज रात को तुम्हारे पास आए थे? उन्हें हमारे पास बाहर ले आओ कि हम उन्हें शारीरिक रूप से जान सकें।' तब लूत द्वार से होकर उनके पास गया, और उसके पीछे का द्वार बन्द करके कहा, हे मेरे भाइयो, ऐसी दुष्टता न कर! 'देख, मेरी दो बेटियाँ हैं, जो किसी पुरुष को नहीं जानतीं; कृपया, मैं उन्हें तेरे पास बाहर ले आऊंगा, और तू उनके साथ जैसा चाहे वैसा ही कर सकता है; केवल इन आदमियों से कुछ न करना, क्योंकि इसी कारण वे मेरी छत की छाया में आए हैं।' और उन्होंने कहा, 'पीछे खड़े हो जाओ!' तब उन्होंने कहा, यह तो यहां रहने आया, और न्यायी का काम करता है; अब हम उनके साथ तुम्हारे साथ और भी बुरा व्यवहार करेंगे।' तब उन्होंने लूत को बहुत दबाया, और द्वार तोड़ने के लिथे निकट आए। परन्तु स्वर्गदूतों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने साथ घर में खींच लिया, और द्वार बन्द कर लिया।" (उत्पत्ति 19:4-10) स्वर्गदूतों ने लूत को अपने मिशन का उद्देश्य समझाया ताकि "जब भोर हुई, तो स्वर्गदूतों ने बहुत जल्दी करने के लिए, यह कहते हुए, 'उठ, अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियों को ले जो यहाँ हैं, ऐसा न हो कि तुम शहर की सजा में भस्म हो जाओ।'"... "'जल्दी करो, वहाँ भाग जाओ। क्योंकि जब तक तुम कुछ नहीं कर सकते, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता। वहाँ पहुँचो।' जब लूत सोअर में आया, तब सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ था, तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर यहोवा की ओर से आकाश पर से गन्धक और आग बरसा दी, सो उस ने उन नगरोंको, अर्यात् तराई में, और नगरोंके सब रहनेवालोंको उलट दिया, और जमीन पर उग आया।" (उत्पत्ति 19:

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अवज्ञा के कारण अदन की वाटिका से हटा दिया, नूह, उसके परिवार और चुने हुए जानवरों को छोड़कर मनुष्य की दुष्टता और उसके दिल (मन) के बुरे इरादे के कारण सभी लोगों को पानी से नष्ट कर दिया। अब उसने घोर दुष्टता के कारण सदोम को आग से नष्ट कर दिया। यह स्पष्ट होना चाहिए कि परमेश्वर द्वारा अवज्ञा और दुष्टता को सहन नहीं किया जाता है और जो लोग ऐसा करते हैं वे भी नष्ट हो जाएंगे जब तक कि वे अपनी दुष्टता से नहीं हटते और परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं करते।

प्रश्न
1. कौन सा पाप इतना बड़ा था कि परमेश्वर ने सदोम को नष्ट करने का फैसला किया?
ए ____ गर्भपात
बी ____ शैतान पूजा
सी ____ समलैंगिकता

2. लूत ने यरदन के पूर्व के देश को इसलिये चुना कि
ए ____ वह सदोम और अमोरा द्वारा पेश किए गए शहर के जीवन को चाहता था।
बी ____ वह और अब्राहम जैसा कि उन्होंने लगातार तर्क दिया।
सी ____ भूमि बेहतर भूमि प्रतीत होती है।
डी ____ बाइबिल नहीं कहता है।

3. परमेश्वर की आज्ञा न मानने से समस्याएँ पैदा हुईं
ए ____ ईडन गार्डन में।
बी ____ नूह के समय में लोगों के साथ।
सी ____ सदोम और अमोरा के शहरों में।
डी ____ उपरोक्त सभी।

4. सदोम और अमोरा के आसपास के क्षेत्र के विनाश ने केवल उन पुरुषों को प्रभावित किया जिन्होंने लूत के पास आने वाले पुरुषों [स्वर्गदूतों] को अशुद्ध करने का प्रयास किया था।
सही गलत _____

5. इब्राहीम ने परमेश्वर से बिनती की कि इन नगरों में धर्मी लोगों के रहने के कारण सदोम और अमोरा के नगरों को बचा ले।
सही गलत _____

गुलामी

पाठ 6
परमेश्वर ने इब्राहीम को कसदियों के ऊर में रहने के दौरान दूर देश में जाने के लिए बुलाया। उसके पास घर बुलाने के लिए कोई जगह नहीं थी; केवल एक वादा कि उसके वंशजों के पास एक दिन एक घर होगा। इब्राहीम के वंशज अंततः मिस्र के दास बन जाएंगे। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन्हें दासता से छुड़ाया, कि वे उनके निज भाग के देश में जाएं, जहां इब्राहीम फिरता था। यह बहुत कुछ वैसा ही है जैसे कि दुष्टता के पाप के दास होने के कारण पृथ्वी पर हमारे यहाँ अल्प प्रवास। मसीह के द्वारा परमेश्वर हमें पाप की दासता से स्वर्ग में एक घर में पहुंचाएगा।

उस सुदूर देश, मिस्र में उनकी यात्रा, याकूब के पुत्रों द्वारा एक छोटे भाई, यूसुफ से कायरतापूर्ण कार्य के साथ शुरू हुई, जब उन्होंने उसे इब्राहीम के पहले बेटे के वंशज इश्माएलियों के एक समूह को बेच दिया। उन्होंने उसे एक सामान्य दास के रूप में बेच दिया और फिर याकूब को यह विश्वास दिलाने के लिए धोखा दिया कि यूसुफ को एक जंगली जानवर ने मार डाला था। याद रखिए, याकूब ने भी आशीष पाने के लिए अपने पिता को धोखा दिया था। यूसुफ परमेश्वर के प्रति वफादार रहा और परमेश्वर ने उसे अपनी योजना में इब्राहीम के वंशजों से एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए इस्तेमाल किया। यह उन लोगों के बीच वर्षों की गुलामी के बाद होगा जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बजाय सृष्ट वस्तुओं की पूजा करते थे।

मिस्र में चार सौ वर्ष के बाद मूसा का जन्म हुआ। उसके माता-पिता ने बच्चे को मारने के लिए फिरौन के आदेशों की अवहेलना की और उन्होंने उसे छिपा दिया। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा न मानने के बजाय फिरौन की आज्ञा का उल्लंघन करने की अपनी इच्छा के द्वारा नेक काम किया। "विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने उसके जन्म के तीन महीने बाद तक उसे छिपा रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह कोई साधारण बच्चा नहीं है, और वे राजा के आदेश से नहीं डरते थे।" (इब्रानियों 11:23) मूसा को फिरौन की बेटी ने पाया, जिसने उस पर दया की थी। मूसा की बहिन ने अपनी माता को बुलवा भेजा, और फिरौन की बेटी ने उस से कहा, इस बालक को लेकर मेरे लिथे उसका पालन-पोषण कर, और मैं तुझे चुका दूंगी। तब उस स्त्री ने बच्चे को लेकर उसका पालन-पोषण किया: जब बच्चा बड़ा हो गया, तो उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका पुत्र हुआ: उसने उसका नाम मूसा रखा, और कहा, 'मैंने उसे पानी से निकाला है'। (निर्गमन 2:9-10)

इब्रानियों 11:24-27 में हम पढ़ते हैं, "विश्वास ही से मूसा ने बड़ा होने पर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। उसने पाप के सुखों का आनंद लेने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करना चुना। थोड़े समय के लिए। उसने मसीह के लिए अपमान को मिस्र के खजाने की तुलना में अधिक मूल्यवान माना, क्योंकि वह अपने इनाम की प्रतीक्षा कर रहा था। विश्वास से वह राजा के क्रोध से नहीं डरता, मिस्र छोड़ दिया; वह दृढ़ रहा क्योंकि उसने उसे देखा था जो अदृश्य है।" चालीस वर्षों तक मिस्रियों के सभी तरीकों में प्रशिक्षित होने के बाद, परमेश्वर ने मूसा को एक चरवाहे के रूप में एक और चालीस साल के लिए प्रशिक्षित किया, इससे पहले कि वह अब्राहम के वंशजों को गुलामी के बंधन से उस देश में ले जाने के लिए बुलाए, जिसका वादा बहुत पहले अब्राहम, इसहाक और याकूब से किया गया था।

इन पूर्व दासों के विश्वास और आज्ञाकारिता की कमी के कारण, उन्हें अपनी प्रतिज्ञा की हुई भूमि का पालन करने और दावा करने के लिए तैयार होने में चालीस साल लग गए। भले ही यह भूमि उन्हें भगवान की कृपा से दी गई थी, लेकिन उन्हें इसमें रहने के लिए भगवान के दुश्मनों से लड़ना पड़ा।

आज मानव जाति पाप के बंधन में है. हम मसीह के लहू के द्वारा पाप के बंधन से मुक्त हुए हैं। हमेशा परमेश्वर के शत्रुओं से लड़ते हुए, स्वर्ग, हमारी प्रतिज्ञा की भूमि तक पहुँचने के लिए हमें निरंतर आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता की आवश्यकता होती है।

प्रश्न
1. मूसा एक गुलाम पैदा हुआ था, लेकिन फिरौन का पोता बन गया, जो पूरे मिस्र का शासक था।
सही गलत _____

2. मूसा ने फिरौन के पोते के रूप में बने रहने का चुनाव नहीं किया
A ____ क्योंकि फिरौन अन्य पोते-पोतियों के प्रति पक्षपाती था
बी ____ क्योंकि फिरौन ने मूसा के जन्म परिवार के साथ दुर्व्यवहार किया।
सी ____ यहोवा परमेश्वर में अपने विश्वास के द्वारा।

3. चूँकि परमेश्वर ने कनान को मिस्र के भूतपूर्व दासों को दिया था, इसलिए उन्हें अपनी प्रतिज्ञा की भूमि प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं थी।
सही गलत _____

4. जो लोग आज पाप के दास हैं, उन्हें स्वर्ग, आत्मिक प्रतिज्ञा की भूमि को प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।
सही गलत _____

5. परमेश्वर ने मूसा को मिस्र में 40 वर्ष और एक चरवाहे के रूप में 40 वर्षों के लिए प्रशिक्षित किया, उसे मिस्र की दासता से इस्राएल के बच्चों का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया।
सही गलत _____

मुक्ति

पाठ 7
उचित समय पर मूसा की माता मूसा को फिरौन की बेटी के पास ले गई। "मूसा मिस्रियों के सभी ज्ञान में शिक्षित था और भाषण और कार्य में शक्तिशाली था। जब मूसा चालीस वर्ष का था, तो उसने अपने साथी इस्राएलियों से मिलने का फैसला किया। उसने देखा कि उनमें से एक मिस्री द्वारा दुर्व्यवहार किया जा रहा था, इसलिए वह अपने पास गया रक्षा और मिस्री को मार कर उसका बदला लिया। मूसा ने सोचा था कि उसके अपने लोगों को पता चल जाएगा कि भगवान उन्हें बचाने के लिए उसका इस्तेमाल कर रहे थे, लेकिन उन्होंने नहीं किया। " (प्रेरितों के काम 7:22-26)

अपने उतावले काम के डर से वह फिरौन के पास से भाग गया, और मिद्यान देश को चला गया। उसने खुद को एक चरवाहे के रूप में चालीस वर्षों तक दीन किया, जिसके बाद परमेश्वर उसके लिए अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों को शारीरिक दासता के बंधन से मुक्त करने के लिए तैयार था, जो पाप की हमारी दासता का प्रतीक है। परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रियों को विनाश पर आज्ञाकारिता चुनने के दस अवसर दिए। फिरौन परमेश्वर की शक्ति को पहचानता हुआ दिखाई दिया, लेकिन हर गुजरते अवसर के साथ उसके लिए मना करना आसान हो गया। अपने पहले बच्चे की मृत्यु के बाद उसने इस्राएलियों को जाने के लिए कहा। लेकिन उसने अपना मन बदल लिया और उन्हें गुलामी में वापस लाने के लिए उनका पीछा किया।

यह लाल समुद्र पर था कि इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने या दासता में लौटने का चुनाव करना था। यह वहाँ भी था कि फिरौन और उसकी सेना को समुद्र के पानी में दफनाया गया था। दूसरी तरफ गुलामी से मुक्त एक नए राष्ट्र का उदय हुआ। यह भी पाप से हमारी उड़ान के समान है। मसीह के क्रूस पर, हमें एक निर्णय लेना चाहिए और एक नई सृष्टि के रूप में उठने के लिए अपने पापी स्वामी को बपतिस्मा के जल में दफना देना चाहिए। पौलुस ने रोमियों 6:3-7 में कहा, "या क्या तुम नहीं जानते कि हम सब ने जो मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जी उठे, तो हम भी नया जीवन जीएं: यदि हम उसकी मृत्यु में उसके साथ ऐसे ही एक हो जाएं, तो उसके पुनरुत्थान में भी उसके साथ एक हो जाएं।

उन्होंने तुरंत कनान में प्रवेश नहीं किया क्योंकि उनका विश्वास कमजोर था। उन्होंने यहोशू और कालेब की रिपोर्ट को ठुकरा दिया जो परमेश्वर पर भरोसा रखते थे।

नतीजतन, वे जंगल में, अपनी वादा की गई भूमि के पास, चालीस वर्षों तक भटकते रहे, कभी भी वादा किए गए देश में प्रवेश नहीं किया। यह तब तक नहीं था जब तक कि बीस वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों की मृत्यु नहीं हुई (यहोशू और कालेब को छोड़कर) कि उन्हें वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। मूसा को परमेश्वर ने उन्हें कनान में ले जाने से मना किया था। इसके बजाय

यह मूसा का वफादार सहयोगी यहोशू था। एक बार जब उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी आज्ञा का पालन किया, तो उन्हें अपने वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति दी गई। हमें भी आज्ञाकारी विश्वास होना चाहिए और अपनी प्रतिज्ञा की हुई भूमि, स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर से मेल-मिलाप करना चाहिए।

प्रशन
1. इस्राएल को ज़ुल्म से छुड़ाने के प्रयास में, मूसा ने परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के बजाय मामलों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया।
सही गलत _____

2. परमेश्वर ने फिरौन को मृत्यु और विनाश से बचने का विकल्प नहीं दिया।
सही गलत _____
3. परमेश्वर में विश्वास ने इस्राएल के बच्चों को लाल सागर के पानी से गुजरने और बंधन से मुक्त होने और दूसरे किनारे पर एक नए राष्ट्र के आने की अनुमति दी।
सही गलत _____

4. वचन के देश में पहिले पहुँचने पर, इस्राएलियों ने विश्वास किया
ए ____ भगवान के मार्गदर्शन के साथ यहोशू और कालेब की रिपोर्ट।
बी ____ अपनी क्षमता।

5. मूसा को अनुमति दी गई थी
A ____ इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में ले जाता है।
बी ____ वादा किए गए देश में प्रवेश करें लेकिन यहोशू को नेतृत्व करने के लिए कहा।
सी ____ देखें लेकिन वादा की भूमि में प्रवेश न करें।

पाषाण वाचा की सारणी

पाठ 8
परमेश्वर ने इस्राएलियों पर आशीष के कई चमत्कार किए, जिनमें से सबसे प्रमुख था लाखों दासों की अगुवाई उस देश की ओर करना जिसकी प्रतिज्ञा इब्राहीम से वर्षों पहले की गई थी।

मिस्र से निकलने के तीन महीने बाद और इब्राहीम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के लगभग चार सौ वर्ष बाद उन्होंने सीनै में डेरे डाले। यहाँ परमेश्वर प्रकट हुए, मूसा को उसकी आज्ञाएँ सुनाते हुए। "यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास आ, और यहीं रह, और मैं तुझे पत्यर की पटियाएं दूंगा, और व्यवस्था और आज्ञाएं जो मैं ने उनकी शिक्षा के लिथे लिखी हैं।" (निर्गमन 24:12) हम उन्हें दस आज्ञाओं के रूप में संदर्भित करते हैं और वे नीचे सूचीबद्ध हैं। (निर्गमन 20:3-17)
° "मेरे सामने तुम्हारे पास कोई अन्य देवता नहीं होगा।"
° "तू ऊपर स्वर्ग में या नीचे पृथ्वी पर या नीचे के पानी में किसी भी चीज़ के रूप में अपने लिए एक मूर्ति नहीं बनाना चाहता है। आप उन्हें झुकाएंगे या उनकी पूजा नहीं करेंगे; क्योंकि मैं, तुम्हारा भगवान, एक हूं ईर्ष्यालु परमेश्वर, जो मुझ से बैर रखते हैं, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन में से तीसरी और चौथी पीढ़ी को पितरों के पाप का दण्ड बच्चों को देता है, परन्तु एक हजार [पीढ़ी] से प्रेम करता है।”
° "तू अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरूपयोग न करना, क्योंकि यहोवा किसी को निर्दोष न ठहराएगा जो उसके नाम का दुरूपयोग करता है।
° "सब्त के दिन को पवित्र रखकर स्मरण रखना। छः दिन तक
परिश्रम करो और अपना सब काम करो, परन्तु सातवां दिन उनके लिये विश्रामदिन है
भगवान आपके भगवान। उस पर न तो तू, न तेरा बेटा या बेटी, न तेरा दास, न दासी, न पशु, और न परदेशी तेरे फाटकोंके भीतर कोई काम करना। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र, और जो कुछ उन में है सब को बनाया, परन्तु सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने सब्त के दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया।”
° "अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे।"
° "तुम हत्या नहीं करोगे।"
° "तुम व्यभिचार नहीं करना।"

- "तू चोरी नहीं करेगा।"
- "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।"
- "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। तू अपने पड़ोसी की पत्नी, या उसके दास या दासी, उसके बैल या गधे, या अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच नहीं करना।"

उन्हें फिर से पढ़ें और ध्यान दें कि वे कानून, नियम, कानून, करने की चीजें और नहीं करने वाली चीजें हैं। क्या आपको क्षमा या विश्वास का कोई कथन मिला? नहीं! क्या आपने देखा कि केवल एक या दो ही मनुष्य के दिल, दिमाग या व्यवहार से संबंधित हैं? नहीं! यह वाचा हमें मसीह के पास लाने के लिए बनाई गई थी, और जैसा कि इब्रानियों में कहा गया है, एक नई वाचा के द्वारा प्रतिस्थापित की जाती है, एक वाचा जो दुष्टता को क्षमा करती है। "क्योंकि यदि उस पहिले वाचा में कुछ भी गलत न होता, तो दूसरे के लिये कोई स्थान न ढूंढ़ा जाता। परन्तु परमेश्वर ने लोगों में दोष पाया और कहा: 'समय आ रहा है, यहोवा की यही वाणी है, जब मैं उसके साथ एक नई वाचा बान्धूंगा। इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ यह उस वाचा के समान न होगा, जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी, जब मैं ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल दिया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर विश्वास नहीं करते थे।

"यह वाचा मैं उस समय के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, यहोवा की यही वाणी है। मैं अपक्की व्यवस्था उनके मन में रखूंगा, और उन्हें उनके मन में लिखूंगा। मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।" फिर कोई अपके पड़ोसी वा अपके भाई को यह न सिखाएगा, कि यहोवा को जानो, क्योंकि छोटे से ले कर बड़े तक वे सब मुझे जानेंगे, क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनके पापोंको स्मरण करूंगा। अब और नहीं'।" (इब्रानियों 8:10-12)

"इस वाचा को 'नया' कहकर, उसने पहली वाचा को अप्रचलित कर दिया है; और जो अप्रचलित है और बूढ़ा हो गया है वह जल्द ही गायब हो जाएगा।" (इब्रानियों 8:13)

जब यीशु आया, तो उसने पश्चाताप का संदेश, ईश्वर की कृपा और विश्वास, प्रेम और मेल-मिलाप का संदेश दिया। उसका मिशन था "उसकी इच्छा पूरी करना जिसने मुझे भेजा है और उसका काम पूरा करना है।" (यूहन्ना 4:34) उसने हमारे पापों के प्रायश्चित बलिदान के रूप में स्वेच्छा से अपना जीवन देने के द्वारा पाप की क्षमा के लिए मार्ग खोल दिया, उन सभी के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं और जिन्होंने "जिस शिक्षा को तुम्हें सौंपा गया था उसका पूरे मन से पालन किया।" (रोमियों 6:17)

"इस विश्वास के आने से पहिले, हम व्यवस्था के द्वारा बन्धुआई में थे, और विश्वास के प्रगट होने तक हम को बन्दी रखा गया था। सो हमें मसीह तक ले जाने के लिथे व्यवस्था दी गई, कि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। अब वह विश्वास आ गया है, तो हम हैं अब कानून की निगरानी में नहीं है।" (गलतियों 3:23-25)

"और तू ने अपके अपराधों और अपने शरीर के खतनारहित होने के कारण मरा हुआ होकर, जो हमारे विरोध में हमारे विरोध में था, उस की लिखावट को मिटाकर, सब अपराधों को क्षमा करके, उसके साथ जीवित किया है। और वह क्रूस पर कीलों से ठोंककर उसे मार्ग से हटा लिया है।” (कुलुस्सियों 2:13-14 एनकेजेवी)

परमेश्वर के प्रेम और दया ने उसके पुत्र में सिद्ध लहू बलिदान प्रदान किया।मसीह की मृत्यु ने "नई वाचा" की स्थापना की, जो उन सभी को पापों की क्षमा और पाप से मुक्ति प्रदान करती है जो पश्चाताप और आज्ञाकारिता की बुलाहट का पालन करते हैं।(इब्रानियों 9:16-28 पढ़ें)।

तो "बोलो और उन लोगों के रूप में कार्य करें जो कानून द्वारा न्याय किए जाने वाले हैं जो स्वतंत्रता देता है, क्योंकि दया के बिना निर्णय किसी को भी दिखाया जाएगा जो दयालु नहीं है। दया न्याय पर विजय प्राप्त करती है"! (याकूब 2:12-13)

प्रशन
1. परमेश्वर ने मूसा को पहाड़ पर बुलाया कि वह उसके लिए दस आज्ञाएं दें
   ए ___ अन्यजातियों और इस्राएलियों [यहूदी]।
   बी ___ हमेशा के लिए इज़राइल के बच्चे।
   सी ___ इस्राएलियों को एक और और बेहतर वाचा द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।

2. दस आज्ञाएँ, कानून, एक शिक्षक या संरक्षक था
मानव जाति को विश्वास में लाने के लिए।

सही गलत _____

3. दस आज्ञाओं में से कुछ को बाहरी रूप से रखा जा सकता था, भले ही वे मन और हृदय में आंतरिक रूप से न रखी गई हों।
सही गलत _____

4. मूसा की व्यवस्था ने उद्धार, पाप की क्षमा के लिए व्यवस्था की।
सही गलत _____

5. परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था, "आवश्यकताओं की लिखावट" को हटा दिया, इसे मसीह की मृत्यु के द्वारा सूली पर चढ़ा दिया।
सही गलत _____

भगवान के दिल के बाद

पाठ 9
मिस्र की गुलामी से छुड़ाए जाने और दूध और शहद से बहने वाली भूमि को प्राप्त करने के बाद, इस्राएल पर न्यायियों का शासन था जिन्हें परमेश्वर ने चुना था। परन्तु इस्राएली अपने चारों ओर के सभी राष्ट्रों के समान बनना चाहते थे। उन्होंने भगवान को अस्वीकार कर दिया और एक राजा चाहते थे। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें एक राजा दिया - शाऊल। उन्होंने शासन किया जो लोग चाहते थे - भगवान के आज्ञाकारी सेवक के बजाय राय से शासन करें। इसलिए, शमूएल ने परमेश्वर के निर्देश पर दाऊद को राजा के रूप में अभिषेक किया, जो उसकी आज्ञा का पालन करेगा। कई बार दाऊद को शाऊल के पास से भागना पड़ा क्योंकि शाऊल एक आम अपराधी की तरह उसका शिकार कर रहा था जो उसे मार डालना चाहता था। फिर भी, इसके बावजूद दाऊद ने "परमेश्वर के अभिषिक्त के विरुद्ध" कुछ भी करने से इनकार कर दिया।

शाऊल की मृत्यु के बाद दाऊद राजा बना। परमेश्वर ने दाऊद के बारे में कहा: "शाऊल को हटाने के बाद, उसने दाऊद को अपना राजा बनाया। उसने उसके बारे में गवाही दी: 'मैंने यिशै के पुत्र दाऊद को अपने दिल के अनुसार एक आदमी पाया है; वह वह सब कुछ करेगा जो मैं उससे चाहता हूं।' इस मनुष्य के वंश में से परमेश्वर ने इस्राएल के लिए उद्धारकर्ता यीशु को लाया है, जैसा कि उसने वादा किया था।" (प्रेरितों 13:22-23)

एक अवसर पर दाऊद के लोग एक बहुत धनी व्यक्ति के झुंडों में से थे, और वहाँ उन्होंने उसकी रक्षा करने के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया, न कि उसके चरवाहों के साथ दुर्व्यवहार किया और न ही उसका कुछ लिया। बाद में दाऊद पास था, उसके आदमी भूखे थे और उसे भोजन की आवश्यकता थी इसलिए दाऊद ने सहायता का अनुरोध किया, लेकिन नाबाल, एक चतुर व्यक्ति, जो अपने मतलबी व्यवहार के लिए जाना जाता था, ने कठोर और अपमानजनक तरीके से दाऊद के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। दाऊद बहुत क्रोधित हुआ, उसे मारने का इरादा किया, लेकिन उसने पश्चाताप किया, परमेश्वर को अपना न्याय करने की अनुमति दी।

परन्तु दाऊद के जीवन में सब कुछ ईश्वरीय नहीं था। अपनी सेना के साथ युद्ध करने के बजाय वह घर पर ही रहा। वहाँ उसने एक सुंदर स्त्री को देखा, जो उस पर तरस गई और उसे व्यभिचार करने के लिए भेजा। यह जानकर कि वह गर्भवती है, दाऊद ने उसके पाप को छिपाने के लिए उसके पति की हत्या का आदेश दिया। भयानक? हाँ! भगवान को प्रसन्न? नहीं! दाऊद ने शारीरिक संतुष्टि की इच्छा की और प्रलोभन के आगे झुक गया। इस पाप के लिए उन्होंने बहुत कुछ सहा। परन्तु जब परमेश्वर के दूत नातान से उसका सामना हुआ, तो उसने अपनी दुष्टता स्वीकार की, पश्चाताप किया और क्षमा की याचना की। हालाँकि उसे क्षमा कर दिया गया, फिर भी उसे अपने पापी कार्यों के परिणाम भुगतने पड़े।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके हृदय की मनोवृत्ति, उसका पश्चाताप और परमेश्वर से मेल मिलाप करने के लिए क्षमा की इच्छा यही कारण है कि परमेश्वर कहेगा "मैंने यिशै के पुत्र दाऊद को अपने मन के अनुसार पाया है, जो मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।" आज सबकी यही स्थिति है। हम सभी ने पाप किया है, हमें अपने पाप के प्रति उचित दृष्टिकोण की आवश्यकता है और हमें परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने की आवश्यकता है।

परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था कि उसका एक वंशज हमेशा के लिए उसके सिंहासन पर बैठेगा, यीशु, मसीह का जिक्र करते हुए, जिसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा। यह मसीह था, पाप रहित, पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, स्वेच्छा से हमारे लिए प्रायश्चित बलिदान के रूप में अपना जीवन दे रहा था, इस प्रकार दाऊद और अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा कर रहा था।

प्रशन
1. दाऊद ने इस्राएल के राजा शाऊल को हानि पहुँचाने से इन्कार किया, क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा राजा ठहराया गया था और उसकी हानि करना परमेश्वर का सम्मान करना नहीं होगा।
सही गलत _____

2. भगवान के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति का मतलब है
एक _____ जो भगवान के नियमों और आज्ञाओं को सिखाता है।
बी _____ जो भगवान के लोगों का नेतृत्व करने में शक्तिशाली है।
सी _____ जो सही करने की इच्छा रखता है और पापपूर्ण कृत्यों को ठीक करने की इच्छा रखता है जो उसने किया होगा।

3. दाऊद हमारे लिए एक उदाहरण है कि वह
एक _____ एक शक्तिशाली राजा था।
बी _____ ने पाप नहीं किया इसलिए यीशु जिसके पास कोई पाप नहीं था वह दाऊद का पुत्र हो सकता है।
सी _____ को पश्चाताप करने और अपने पापों से अवगत होने पर भगवान की दया के लिए प्रार्थना करने की जल्दी थी।

4. दाऊद के कार्यों से परमेश्वर हमेशा प्रसन्न रहता था।
सही गलत _____

5. दाऊद के वंशज यीशु ने पापों की क्षमा के लिए प्रायश्चित बलिदान के रूप में अपना जीवन दिया
सही गलत _____

पुरानी वाचा के पैगंबर

पाठ 10
उस युग के दौरान परमेश्वर ने सीधे आदम, नूह, अब्राहम, इसहाक और याकूब से बात की, जिसे कई लोग पितृसत्तात्मक युग के रूप में संदर्भित करते हैं। इस्राएल राष्ट्र की स्थापना के समय उस ने मूसा, यहोशू और फिर उनके न्यायियों से बातें कीं। जब शमूएल न्याय कर रहा था तब लोगों ने राजा की मांग करते हुए विद्रोह कर दिया। राजाओं के शासनकाल के दौरान परमेश्वर ने मनुष्यों के माध्यम से अपना संदेश दिया जिसे हम भविष्यद्वक्ता के रूप में संदर्भित करते हैं। सभी भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल के बच्चों को परमेश्वर का संदेश दिया, लेकिन सभी ने आने वाले मसीहा के बारे में भविष्यवाणियां नहीं कीं। सैकड़ों वर्षों में और कई अलग-अलग भविष्यवक्ताओं को 50 से अधिक भविष्यवाणियां दर्ज की गई हैं, जो सभी यीशु में पूरी हुई थीं। कुछ भविष्यवाणियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है जिसके बाद उनके नए नियम की पूर्ति हुई है।

मलाकी 3:1"ध्यान रहे! मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा। तब जिस यहोवा को तुम ढूंढ़ रहे हो, वह अचानक अपने भवन में आ जाएगा। वह वाचा का दूत है जिसे तुम चाहते हो। ध्यान रहे! वह आ रहा है!" स्वर्गीय सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।
मत्ती 2:2राजा हेरोदेस के दिनों में यहूदिया के बेतलेहेम में यीशु के जन्म के बाद, पूर्व से पण्डितों ने यरूशलेम में आकर पूछा, "यहूदियों का राजा कहाँ पैदा हुआ था? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और आए हैं उसकी पूजा करने के लिए।"

उत्पत्ति 49:10यहूदा के पास से राजदण्ड न छूटेगा, और न उसके पांवों के बीच से उसकी लाठी, जब तक कि उसे कर न मिले; और देश देश के लोगोंकी आज्ञा उसी की होगी।
लूका 3:23- 38- यीशु की वंशावली दाऊद के माध्यम से आदम तक अपने वंश का पता लगा रही है।

यिर्मयाह 23:5"देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, जब मैं दाऊद के लिथे एक धर्मी डाली उठाऊंगा, और वह राजा होकर बुद्धिमानी से राज्य करेगा, और देश में न्याय और धर्म के काम करेगा।
मत्ती 1:1यह इब्राहीम के पुत्र दाऊद के पुत्र यीशु मसीह के जीवन का अभिलेख है।

यशायाह 7:13-4 और उस ने कहा, हे दाऊद के घराने, सुन, क्या तेरे लिथे मनुष्य को थका देना बहुत कम है, कि तू मेरे परमेश्वर को भी

थका देता है? इसलिथे यहोवा तुझे एक चिन्ह देगा। देख, कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जने, और उसका नाम इम्मानुएल रखे।
मत्ती 1:18अब ईसा मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ। जब उनकी माता मरियम यूसुफ से जुड़ी हुई थीं, उनके साथ रहने से पहले, उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती होने का पता चला था।

मीका 5:2परन्तु हे बेतलेहेम एप्राता, हे बेतलेहेम, जो यहूदा के कुलोंमें से बहुत छोटे हैं, मेरे लिथे मेरे लिथे एक ऐसा निकलेगा, जो इस्राएल पर प्रधान होगा, और जो प्राचीनकाल से और प्राचीनकाल से आता आया है।
मत्ती 1:1यह दाऊद के पुत्र यीशु मसीह के जीवन का अभिलेख है, [बेतलेहेम] इब्राहीम का पुत्र।

जकर्याह 9:9हे सिय्योन की पुत्री, अति आनन्दित हो! हे यरूशलेम की पुत्री, ऊँचे स्वर से चिल्लाओ! देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है; धर्मी और उद्धार पाने वाला वह है, दीन और गदहे पर, और बछेड़े पर, और गदहे का बच्चा।
मत्ती 21:6-7और चेलों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें ठहराया, और गदहे और गदहे को ले जाकर अपके अपके वस्त्र पहिना लिए; और वह उस पर बैठ गया।

यशायाह 53:5परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति की ताड़ना उस पर थी; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाते हैं
मत्ती 27:26तब उस ने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया; परन्तु यीशु ने कोड़े मारे और क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए छुड़ाया।

यशायाह 53:7उस पर अन्धेर और दु:ख हुआ, तौभी उस ने अपना मुंह न खोला; उस मेम्ने की नाईं जो वध के लिथे ले जाया जाता है, और उस भेड़ की नाईं जो अपके कतरनेवालोंके साम्हने चुप रहती है, सो उस ने अपना मुंह न खोला।
मत्ती 27:12-14जब यीशु पर महायाजकों और पुरनियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा था, तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू नहीं सुनता कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं? परन्तु यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।

यशायाह 53:9और उन्होंने दुष्ट और धनवान के साथ उसकी मृत्यु के समय उसकी कब्र बनाई, यद्यपि उस ने कोई उपद्रव नहीं किया था, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली थी।
मत्ती 27:57-59- बाद में उस शाम अरिमथिया से एक अमीर आदमी आया। उसका नाम यूसुफ था, और वह यीशु का चेला बन गया था। वह पीलातुस के पास गया और उसने यीशु की लाश मांगी, और पीलातुस ने उसे करने का आदेश दिया। सो यूसुफ ने लोय को लेकर उसे एक साफ सनी के कपड़े में लपेट दिया। फिर उस ने उसे अपनी नई कब्र में रखा, जिसे उस ने चट्टान में से काटकर बनाया था। कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़कने के बाद, वह चला गया,

प्रशन

1. परमेश्वर ने सीधे आदम, नूह, अब्राहम और दाऊद से बात की।
   सही गलत _____

2. एक उद्धारक के बारे में कोई भविष्यवाणियां नहीं हैं

   सही गलत _____

3. यशायाह एक मसीहा के बारे में भविष्यवाणी करने वाला एकमात्र भविष्यद्वक्ता था?
   सही गलत _____

4. कई भविष्यवक्ताओं द्वारा 50 से अधिक भविष्यवाणियां की गई थीं, जो सभी नासरत के यीशु, द क्राइस्ट में पूरी हुईं
   सही गलत _____

5. परमेश्वर ने इस्राएल के राजाओं के द्वारा अपने भविष्यद्वक्ताओं को अपना सन्देश पहुँचाया।
   सही गलत _____